वे प्रशासनिक परीक्षा में भी उत्तीर्ण हुए। परन्तु उसका तिरस्कार कर वे एल.टी. करने के लिए प्रयाग चले गये। वहॉ से उन्होंने 1942 में एल. टी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

संघ के प्रचारक

1942 में पं. दीनदयाल उपाध्याय ने अपना शेष जीवन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के नाते राष्ट्र को समर्पित कर दिया और वे लखीमपुर जिले के प्रचारक नियुक्त किये गये। इस समय उनका स्थानीय आवास पण्डित श्यामनारायण मिश्र के घर पर ही था। 1947 में वे, उत्तर प्रदेश के सहायक प्रान्त प्रचारक बनाये गये और उनका केन्द्र लखनऊ बना।

निरन्तर प्रवास और संगठन कार्य का सतत मार्ग दर्शन, प्रदेश के कोने–कोने में लक्षावधि स्वयंसेवकों से मधुर स्नेहपूर्ण आत्मीयतासिक्त संबंधों की स्थापना यही पंडित जी का एकमेव कार्य था।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी

पण्डित जी प्रवास पर जहां जाते अपने मधुर, निश्छल, स्नेहपूर्ण व्यवहार और मधुर वाणी के बल पर सभी कार्यकर्ताओं का मन मोह लेते थे। उनके श्रेष्ठ मार्ग दर्शन और अविराम साधना के कारण प्रदेश में संघ कार्य,दिन दूनी रात चौगुनी गति से प्रगति के शिखरों की ओर बढ़ने लगा। पण्डित जी अल्पकाल में ही अजातशत्रु एवं असीम श्रद्वा के पात्र बन गये। उनके सम्बन्ध में आने वाले नागरिक भी उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। प्रदेश के सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं सर्वश्री रज्जू भइया, अनन्तराव गोखले, विजय मुंजे, भाऊ जुगादे, सत्यव्रत सिन्हा, रामनाथ भल्ला, डॉ. पी.के. बनर्जी, माधव देवले, वीरेन्द्र भाई आदि सथी कार्यकर्ताओं को उनके साथ कार्य कारने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश

1947 में संघ की ओर से लखनऊ में ''राष्ट्रधर्म प्रकाशन'' की स्थापना हुई और साथ ही राष्ट्रधर्म मासिक, पांचजन्य साप्ताहिक और स्वदेश दैनिक पत्रों का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। पण्डित जी इस प्रकाशन के मार्गदर्शक तथा कर्ता–धर्ता बने।

संघ कार्य के लिये सहप्रान्त प्रचारक के नाते प्रवास भी करते थे और इस पत्र का संचालन भी। पत्रकारिता के कार्य में सर्वश्री राजीव लोचन अग्निहोत्री, अटल बिहारी वाजपेयी, महावीर प्रसाद त्रिपाठी, महेन्द्र कुलश्रेष्ठ, गिरिश चन्द्र मिश्र, तिलक सिंह